

29⁴
/68

ہی دیکھ دانی تھا وہی لوش
لائی تھیں تھیں تھیں تھیں
42

20
3
10
10
4
4
4
10
10
77

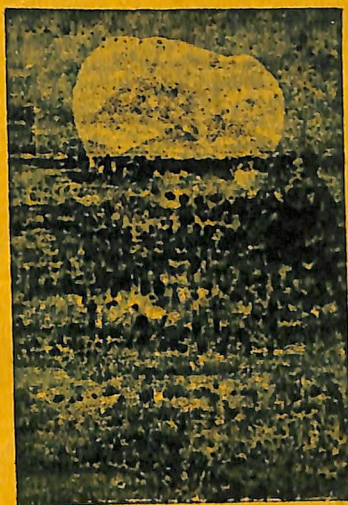
415
/415
Khi

10/85

ॐ

श्री महिम्नःस्तोत्रम् ।

(कश्मीरी भाषा में अर्थ तथा हिन्दी में पदार्थ)



रचयक जीयालाल सराफ

प्रकाशकः श्री भवानी मण्डली हारीपर्वत श्रीनगर
[सर्वाधिकार रचयक के आधीन सुरक्षित हैं]

संवत् २०१२

जिल्द १०००

मूल्य १ रूपया

आरती

ओं शंकरः भव भय हरः भोजतम च म्यानि जारी ।

दुःख त संकट ही त्रिपुर हरः दूर करतम म्य सारी ॥ १ ॥
 छुख च अजर छुख च अमर-छुख च सच्चिदानन्द गण ।

सारिख्य त्रिभवनस च पूरित-व्यापक च त्रिन भवनन
 त्रि नेत्र धारवूनि शंकरः-चूय छुख त्रिशूल धारी

दुःख त संकट ही त्रिपुरहरः दूर करतम म्य सारी ॥ २ ॥
 त्रिन भवनन हुन्द च स्वामी ब्रह्मादिक चि आदीन

चोनूय करण स्मृन तीम-रातस दुहस चिय लीन ।
 च्यानि सेवाय मंज रोजान-तीम कलः धारि धारी

दुःख त संकट० ॥ ३ ॥

च्यानि आज्ञाय कीन छु सपदान-सारि जगतुक विवहार

जगतकि पैदः करनुक पालनुक-मोटे ह्यतोमुत चि भार ।
 च्यानि मायायि कीन छि ब्रह्माण्ड फलिमुन चापारी

दुःख त संकट० ॥ ४ ॥

भक्ती ध्यान युम छु प्रावान गथि जन्मा पु खागन

तसन्दि भापत वज्र भनिधूय तम च भवमरः तारान ।
 छुख करान दोरे संसारः म्य तम च कासान खारी

दुःख त संकट० ॥ ५ ॥

युम चोनूय महिमा गिव्य लोल सान रात्रो दिन

तस छुख सूति सूति रोजान छुयन तसनिश किन्ह चि भिन
 तसन्दि भापत च ही शंकरः छुख मनान हितकारी

दुःख त संकट० ॥ ६ ॥

पुष्पदन्त ओम दास चोनूय सेवाय मंज चि रोजान

च्यानि शाप मनपु लोकम मञ्ज पिव पथर तम पनुन पान ।
 गुण लीला गिव तमि च्यानि रातदिन करून जारी

दुःख त संकट० ॥ ७ ॥

नाव थुवुन अथ गुण लीलायि-च्यानि महिम्नःपार

गुण गिव्य गिव्य रातस दुहुप शंकरः चि आननय आर ।
 मृति लोक छुर खोरथन कास्थस शापच भेपारी

दुःख त संकट० ॥ ८ ॥

यिम गिवान गुण च्यानि शंकरः यिम परान महिम्नःपार

कासान छुख भय तीमनूय छुख दिवान भवसरः तार ।
 भक्तिन छुख छनान चूय छुरो भवसरः खारि खारी

दुःख त संकट० ॥ ९ ॥

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

काफोर रंग सफेद दयायि हुन्द युस अवतार
संसारक सार वासुक हटि यस छु हार
हृदय कमलन मञ्जु युस फेरवुन भारं भार
भवानी सहित तस शिवस म्याने नमस्कार



त्वत्पादपद्म संपरक मात्र संभोग संगिनम् ।
गले पाद्यकया नाथ मामस्वेषमप्रवेशय ॥

पतिनयन कमलन हन्दि मिलापकि भोगकि संग सुस कीवलम्य थायतम् ।
शङ्करः लोलूच हटि म्यकरतम पननिस द्वारस मञ्जु म्य चान्वय ॥

मूढोस्मि दुःख कलितोस्मि जरादि दोषैः
 भीतोस्मि शक्तिरहितोस्मि तवाश्रितोस्मि ।
 शम्भो तथा कलयशीघ्रमुपैमि येन
 सर्वोत्तमाद्दुरमुपोद्भित दुःख मार्ग ॥

मूढ छुस त दुखबुय सूतिन वरिथ छुस, बुजरकि दूषि किज व खोफजदह छुस
 सामर्थ रोस छुस म निर्वल त केवल, आसरस चानिस थफ करिथ छुस ।
 ही शम्भो बनाव म्य जल त्युथ युथ प्रावै, सारिबुय खोतह परम उत्तम बोर
 ब्राविथ छुनह व दुःख मार्ग सारी, रोजहा व चाने समाधि लोर ॥



ॐ नमः शिवाय।

आधीनामगधं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम्

उपद्रुवाणां दलनं महादेवमुपास्महे ॥१॥

| | | | |
|----------------|------------------|--------------|-------------------|
| आधीनाम् | आधियों का | उपद्रुवानाम् | उपद्रुवों का |
| अगधं | औषधि | दलनं | संहार करने वाला |
| दिव्यं | अलौकिक | महादेवम् | महादेव (शिवजी) को |
| व्याधीनाम् | व्याधियों का | उपास्महे | पूजा करता हूँ |
| मूल + कृन्तनम् | मूल + काटने वाला | | |

आधियन हुन्द युस औषधि लु आसवुन

व्याधियन हुन्द युस मूल गालान

कठिजिण उपद्रवन द्रोत युस लु बायान्

तस महादेवस करः शु पूजा।

آمین ہندیس ہوشی چھو آسوں
کھنیں اوپر دھن لیس دوت چھو دایان
ویاویس ہندیس مول گالان
تس مہادیوس کرہ یونہ

अहं पापी पाप क्षपण निपुणाः शंकर भवान्
 अहं भीतो भीता भय वितरणे ते व्यसनिता
 अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्त्वमितरत्
 न जानेहं वक्तुं कुरु सकल शौचे मयि कृपाम् ॥२॥

| | | | |
|----------|------------------|--------|----------------|
| अहं | मैं | अहं | मैं |
| पापी | पापी हूँ | दीनो | दुःखी हूँ |
| पाप | पापों का | दीनः | दुःखी के |
| क्षपण | दूर करने पर | उद्धरण | उद्धार करने के |
| निपुणाः | विद्वान हैं | विधि | तरीकों पर |
| शंकर | हे सुख करने वाले | सज्जः | तयार हैं |
| भवान् | आप | त्वं | आप |
| अहं | मैं | इतरत् | और |
| भीतो | डरा हूँ | न | नहीं |
| भीता | डरे हुये को | जानेहं | मैं जानता हूँ |
| भय | अभय | वक्तुं | कहने को |
| वितरणे | देने पर | कुरु | करो |
| ते | आप को | सकल | सब लोगों के |
| व्यसनिता | शौक है | शौचे | दया के कामिल |
| | | मयि | मुझ पर |
| | | कृपाम् | दया |

ही शंकर छुस भ पापी आसवुन, चूय पापन छुख नाश करान ।
 खूचमुत छुस भ भिइ खोफ छुम म्य वासान, चूय अभय दिवान चूय भय कासान ।
 छुस भ दीन भिइ आरत्येन हुन्द आरुत, आरुत्येन भवसर चूय तारान ।
 करदया म्य बुद्धिहीनस प्यठ च पानै, अभिखोत ज्याद छुस न क्येह भ जानान ॥

ہی شکر چیس بہ پائی ہا سون جی پاپن چھک اشیر کران
 نو چھت چیس بہ بی خوفی چھم ہا سان جی ابھسے دیوان تھی جھے کاسان
 چیس بہ دین میہ عارتن ہند عارت عارتن بویہ سہی چہ تاران
 کر دیا مہی بدھی ہینس پیٹھ چہ پانے امہ خوتہ زیادہ چھس نہ کیمنہ بہ زمان

जनस्त्वदपादाब्ज श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते विस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करुणा ।
भवे लीने दीने मयि मनन हीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातस्त्वमसि करुणा सागर इति ॥३॥

| | | | |
|------------|-----------------------|----------|------------|
| जनः | भक्त लोग | भवे | संसार में |
| लव | आप के | लीने | हुके हुये |
| पादाब्ज | चरण कमल पर | दीने | अनाथ |
| श्रवण | सुननी स्तीर्ण | मयि | मुझ पर |
| मनन | मननः स्तीर्ण | मनन हीने | बे सोच को |
| ध्यान | निदिध्यासन पर | न | नहीं करोगे |
| निपुणाः | तत्पर हैं | करुणा | दया जब |
| स्वयं | खुद ही | कथं | किस तरह |
| ते | वह | नाथ | हे स्वामी |
| विस्तीर्णा | संसार से पार हुये हैं | ख्यातः | मशहूर |
| न + खलु | नहीं निश्चय से | सं + असि | तुम होगे |
| करुणा | दया | करुणा | दया का |
| तेषु | उन पर | सागर | समन्दर |
| करुणा | करने के काबिल | इति | इस तरह |

ही शंकर चानि चरण कमलक युस, करि श्रवण मनन ब्यइ निदि ध्यासन ।
तरि पानै सु भवसरह हाजत तस, चानिन कटाच्छा हुन्द कति रोजन ।
संसारस मज्ज फटिमतिस म्यि दुखियस, विचार रुस्तीस त म्यि अनाथस ।
बलि करख न दया म्यि मूढभाव सोस्तिस, नाव चोन दयासागर वन व कस ।
कति सपदि नाव चोन मशहूर जगतस, शंकर ताराव लु भवसागरस ॥

मैत्रेय भगवत उवाच ॥
प्राज्ञः कदाचित् कदाचित्
व्यापारः स्तुतिः ते मे अनात्मिनः
नाथो ज्ञानं व्यापारो न भवति
शुद्धात्मा न भवति न भवति

ओं महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्य सदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिनामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥४॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|----------------|
| महिम्नः | महिमा को | अथ | इस से |
| पारं ते | आप के अंत को | ऽवाच्यः | अनिन्दय |
| परम | विलकुल | सर्वः | सब |
| ऽविदुषो | न जानने वाले की | स्वमति | अपने बुद्धि के |
| यदि | अगर | परिनाम | ताकत |
| ऽसदृशी | डुट फूट | ऽवधि | हद तक |
| स्तुति | तुता | गृणन् | गाने वाला |
| ब्रह्मादीनां | ब्रह्मादिकों का | ममापि | मुझको |
| अपि | भी | एष | यह |
| तद् | उस महिमा | स्तोत्रे | तुता |
| अवसन्नाम् | न पुहंचने वाले | हर | हे शंकर |
| त्वयि | आप के | निरपवादः | अनिन्द्य है |
| गिरः | वानियां | परिकरः | उद्योग |

ही शंकरह चानि महिमुहुक अन्त युस न, आसि जानान करि चानी तोता
योदवय सो तोता डुट फूट छि आसबुज, क्येह ति छुनह तैजुवाह त बड कांह कथा
ब्रह्मादिकन हुञ्ज ग्ववमूच वाणी, छनह वातान तौर यति सु महिमा
अमि कारण किज बुज हुन्दि ताकत, युस ययवि महिमा छनह तस निन्दा।
म्यति कुर उद्योग उन्व ग्यवह भ चानी गुण, अपवादु रोस्तु बनि इ म्यानी तोता ।

ہی شکرہ چانی مہموک انت یس نہ
یوئے سو تو تا ڈوٹ یوٹ چھی آسون
کیہنتی تعجب تہ بد کا بہہ کتھا
چھنتہ و اتان توری تی سو مہما
نیں گیوی مہما چھنتہ تنس تہدا
اپوادہ سو س بنی تی میانی تو تا

अतीतः पन्थानं तव स महिमा वाङ्मनसयो .
 रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
 स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
 पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥५॥

| | |
|--------------|----------------|
| अतीतः | दूर है |
| पन्थानं | रास्ते से |
| तव | आप का |
| स | वह |
| महिमा | ऐश्वर्य |
| वाङ् | वानी |
| मनसयो | मन के |
| अतद् | देहादिक के |
| व्यावृत्त्या | मिथ्या करने से |
| यं | जिस महिमा को |
| चकितं | डर कर |
| अभिधत्ते | कहते हैं |
| श्रुतिरपि | वेद भी |

| | |
|-------------|--------------------|
| स | वह महिमा |
| कस्य | किस को |
| स्तोतव्यः | तुता करने के काविल |
| गुणः कतिविध | कैसे गुण वाला है |
| कस्य | किस का |
| विषयः | ज्ञान में आया है |
| पदेतु | सुरूप पर |
| अर्वाचीने | स्वाकार |
| पतति | पोछेगा |
| न मनः | नही मन |
| कस्य | किस की |
| न | न |
| वचः | वाणी |

वाणी त मनह निश दूर छु चोन महिमा, सूचि २ वीद बथ दिन रात ग्यवान् ।
 अजताज कमि ^{जज्ञ} चाम् चाम गुणलीला, किथि हिह त केत्याह गुण चे आसान ।
 अदह कुस करि चानि स्वरूपक गुण वर्णन, वाणी त मन ति छुनह तोर वातान ॥

دانی تہ منہ نشہ دور ہون چھوہ ہا غریبی غریبی ویدیتہ دن رات گبران
 از تان کمی تان چسانی گن لیلہ کہتہ ہی تہ کیتیاہ گن چہ آسان
 اوہ کس کرہ چانی سرویک گن ورنہ دانی تہ من تہ چھوہ نہ تور و تان

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत —
 स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
 मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
 पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥६॥

| | |
|-------------|---------------|
| मधुस्फीता | शहद से मीठे |
| वाचः | श्रुतियों को |
| परमं अमृतं | अमृतात्मक . |
| निमित्तवतः | बनाने वाला |
| तव | आप के |
| ब्रह्मन् | हे पूर्णात्मक |
| किं | किया |
| वागपि | वाणी भी |
| सुरगुरोः | ब्रह्मा जी की |
| विस्मय पदम् | अचम्भे की |
| | जगह है |

| | |
|--------------|--------------------|
| ममत्व | मेरी (अपनी) |
| तां | इस |
| वाणीं | वाणी को |
| गुणकथन | गुण गाने के |
| पुण्येन | पुण्य से |
| भवतः | आप के |
| पुनाम् | शुद्ध करोंगा |
| इति | ऐसे |
| अर्थेऽस्मिन् | प्रयोजन इस |
| पुरमथने | हे त्रिगुणात्मन |
| बुद्धिः | बुद्धि |
| व्यवसिता | दृढ निश्चय वाली है |

मांछि सोतह मुधुर अमृत रूपी श्रुति , ब्रह्मा जी सुझ योसह छे वाणी ।
 ही पूरण आत्मक यलि न वाति मोति तोत, अदह कोत वातितोत इ म्मिय अस्तुति
 छुस व चाज गुण ग्याविथ शुद्ध करान वाणी , अमि प्रयोजन बुद्ध दृढ छि म्मियाज ॥

برہما جی سنتر یسہ جی دانی
 اوہ کئی دانی تہ تیہ مہیان استوتی
 امی پرچون دہ دہ جی مہیان
 جی مہیان دہ دہ جی مہیان

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलय कृत
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥७॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-------------|----------------------|
| तवैश्वर्यं | आपका महिमा | अभव्यानां | संसारिकों को |
| यत्तद् | अनिर्वाच्य | अस्मिन् | इस महिमा पर |
| जगद् + उदय | जगत की उत्पत्ति | वरद | हे वर देने वाले |
| रक्षा प्रलय | स्थिती और नाश | रमणीयां | अर्थ वादों से |
| कृत | करने वाला | अरमणीं | दुख प्रापक |
| त्रयी वस्तु | तीन वेदों से साध्य | विहन्तुं | नष्ट करने के वास्ते |
| व्यस्तं | बांटा हुआ | व्याक्रोशीं | मंद भेदों के भ्रमवास |
| तिसृषु | तीन | विदधत | करते हैं |
| गुण भिन्नासु | गुणों से भेद वाले | इहैक | इस संसार में कई |
| तनुषु | शरीरों में | जडधियः | अनात्म वादी |

ही इच्छा पूर्ण त्रेन वीदन मंज, होवमुत स्वरूप चोन त्रिगुणात्मक ।
जगतूच सृष्टि व्यइ स्थिति संहार, त्रन शरीरन मञ्ज दारवुन छुक ।
युस चोन महिमा अनिर्वाची आसुवुन, कयेंह अनात्मवादी युस न जानान ।
मुखन खोश इवान तलहकनि दुख दिवान, महिमा चोन गालनह बापत तिम
बहस करान ।

ہی بجا پورن تران ویدن منتر ! اوست سروپ چون ترگن تنگ
جگت سرشٹی یہ تیختی سمہار ترن شرین منتر دارون چکا
شیر چون ہما ازادی آسٹون سینہ زانقہ داوی پس نہ زمان
موتن خوش ایران تہ کجی دوکھ دیوان ہما چون گاند بایت تیم بحث کران

| | |
|-------------|------------------|
| किमीहः | कैसी कृपा वाला |
| किं कायः | कैसा शरीर वाला |
| स + खलु | |
| किं + उपायः | कैसे युक्ती वाला |
| त्रिभुवनं | त्रैलोकी को |
| किमाधारो | किस आधार वाला |
| धाता | ब्रह्मा जी |
| सृजति | पैदायश करता है |
| किम् | क्या |
| उपादानम् | मसाला वाला |
| इति + च | ऐसे ऐसे ही |

अतर्क्यै वे सौंच
ऐश्वर्ये महिमा वाले
त्वष्टय आप पर
ऽनवसुरदुःस्थो संशय युक्त
हतधियः मोह से मारी अकल
वाला
कुतः को अनात्म विचार वाला
यं ऐसा
कांश्चिन् कईयों को
मुखरयति भक्वास करते है
मोहाय मोह करने वास्ते
जगताम् जगत को

ही ईश्वरह चानि ईश्वरी प्यठ छुय, कैचन मतह वादियन शक सपदान ।
 क्युथ शरीर या कोसुह हिश हरकत, कुस उपाय कुस मसालह छुख लगावान ।
 यमि सूति ब्रह्मा त्रिभवनस सारिसूय, उपदावान छुय इ छिय तिम वनान् ।
 तिम कौतर्क करि २ सरिसूय जगतस, मूह बढनह बापत छिय बकवास करान ।

ہمیشہ چہانی ایشوری پیو چھو
کھنڈ شرمیا کو سہ ہنس حرکت
پہ سیت برہما انہ جھونسا ماریم
تم کو ترک کری کری ساری جانتیں

کینچن مسہ داوین شک پیدان
کس او پکس مصاعف شک پیدان
اُپداوان پکس بی جھی پکس ونا
نمود پکس پکس پکس پکس پکس

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोपि जगता—
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

| | |
|-------------|------------------|
| अजन्मानो | पैदा न होने वाला |
| लोकाः | चौदा भवन |
| किं | किया है |
| अवयववन्तो | स्थूल आकार वाले |
| ऽपि | भी |
| जगतां | लोकों की |
| अधिष्ठातारं | ईश्वर को |
| किं | किये |
| भवविधिः | उत्पत्ति |
| अनादृत्य | न मान कर |
| भवति | होगी |

| | |
|---------------|-----------------|
| अनीशो | ईश्वर के बिना |
| वा | या |
| कुर्याद् | कोन करेगा |
| भुवन | भवनों के |
| जनने | पैदाइश पर |
| कः | कौन है |
| परिकरो | सामग्री |
| यतो | क्योंकि |
| मन्दाः | देहाध्यासी |
| त्वां + प्रति | आप के महिमापर |
| अमरवर | चिदानन्द स्वरूप |
| संशेरत | शक करते हैं |
| इमे | यह |

क्योंह बनान जन्मह रोस आसबुन छु त्रिभुवन, क्योंह बनान थूलह रूप पैदह कति
गछान । क्योंह बनान जगत छुय कर्ता रोस्तुय, उत्पत्ति किथह पाठ्य अथ छि सप-
दान । क्योंह बनान ईश्वर योद आसि मानोन, कमि सामानह स्रति छु उपदावान ।
ही शम्भो इथय पाठ्य दीह अध्यासी, चानिस महिमाहस प्यठ छि शक करान ।

کنہ و ان جنہ رس اسہ و ان جنہ جنون
کنہ و ان جنہ جنہ رس اسہ و ان جنہ جنون
کنہ و ان جنہ جنہ رس اسہ و ان جنہ جنون
کنہ و ان جنہ جنہ رس اسہ و ان جنہ جنون

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
 प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
 रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
 नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|--------------|--------------|-----------------|
| त्रयी | वेद | रुचीनां | श्रदाओं के |
| सांख्यं | विचार | वैचित्र्याद् | नाना प्रकार |
| योगः | यम नियम आदि | ऋजु | सीदा |
| पशुपति | शिव उपासना | कुटिल | टेडा |
| मतं | मत | नाना पथ | बहुत रास्तों पर |
| वैष्णवम् | विष्णु भक्ति | जुषां | चलने वाले |
| इति | ऐसे | नृणाम् | मनुष्यों को |
| प्रभिन्ने | अनेक प्रकार | एको | एक ही |
| प्रस्थाने | रास्तों पर | गम्यः | पाने के काबील |
| परम् + इदं | अच्छा यह है | लं असि | आप ही हैं |
| अदः पथ्यम् | साधु वही है | पयसाम् | पानीयों को |
| इति च | इसी तरह | अर्णव इव | समन्दर जैसा |

क्योंह मत वनान वेदन उन्मुत्त धर्म, क्योंह वनान विचार क्योंह योग साधान ।
 क्योंह शिव नाथ सुँझ भक्ति क्योंह वनान, नारायणह सुँझ भक्ति सीवा ।
 इथय पाठ्य व्योन २ वति प्यठ पकि २, पनुनि २ शौक तिम जान छि जानान ।
 स्यजि वति या उल्टह वति प्यठ पकि २, चुय छुव प्रावणी तिम छि प्रावान ।
 इथह पाठ्य सारिय नदी नालह व्योन २, आखिरस समन्दरस मंज छि वातान ॥

सुन्दर

किनेह मत वनान वेदन उन्मुत्त धर्म
 किनेह शिव नाथ सुँझ भक्ति
 इथय पाठ्य व्योन २ वति प्यठ पकि २, पनुनि २ शौक तिम जान छि जानान ।
 स्यजि वति या उल्टह वति प्यठ पकि २, चुय छुव प्रावणी तिम छि प्रावान ।
 इथह पाठ्य सारिय नदी नालह व्योन २, आखिरस समन्दरस मंज छि वातान ॥

महोच्चः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
 कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
 सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
 नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ११ ॥

| | |
|-----------|-------------------|
| महोच्चः | बुढा बैल |
| खट्वाङ्गं | मुसल [चारपाइ खुर] |
| परशुः | तबर |
| अजिनं | मृग खाल |
| भस्म | चिता भस्म |
| फणिनः | सांप |
| कपालं | नृकरोटी [कलखपर] |
| चेती | भी ऐसी |
| यत् + तव | इतना ही है |
| | आप का |
| वरद | वर देने वाला |
| तन्त्रः | काम की |
| उपकरणम् | सामग्री |

| | |
|----------------|------------------|
| सुराः | ब्रह्मादि |
| तां तां | उस उस |
| ऋद्धिं | ऐश्वर्य को |
| विदधति | दिया हुआ |
| भवद् | आप के |
| भ्रूप्रणिहितां | भूवें से पाई हुई |
| नहि | नहीं |
| स्वात्मारामं | सच्चिदानन्द |
| विषय | विषय भास रूप |
| मृगतृष्णा | भ्रम |
| भ्रमयति | सत्यत वादी |
| | करती है |

वरदायक दान्द मुहुल तबर भस्म, मृग खाल कलह खपर सरूप के आसान ।
 ताम्रि वापत क्य इ चय सामग्री, योसह पानस सति क्य चे रोजान ।
 सुबह हरकच सति ब्रह्मादिकन छुख, रंगह २ कुस २ ऐश्वरी दिवान ।
 पत्त चित् आनन्द छुख विषय मृग तृष्णा, सति आसिथ क्य न भुमरावान् ॥

ہی دروایک داند ہول تبارہم
 ہمی بیت چھٹی چھٹی سہاگہی
 بہم عریج بیت برہا وکن جھک
 ستیت آند جھک ویشی مگر ترشا
 مرگ کھال کلاہ کپیر سرف چہ آسان
 ہیسر پانس بیت چھٹی چہ روزان
 رنگہ رنگہ قسم قسم ایشوری دیوان
 ستیت آند جھک ویشی مگر ترشا

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्तु ध्रुवमिदं
 परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
 समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
 स्तुवन्जीहामि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------|----------------|------------|--------------------|
| ध्रुवं | सत्य है | समस्तेप्ये | सब भी |
| कश्चित् | कुछ लोक | ऐतासन | इस |
| सर्वं | सब जगत | पुरमथन | हे त्रिगुण मल हारक |
| सकलं | सब जगत | तैः | उनके मतों से |
| अपरस्तु | और वेदान्त | विस्मित | हैरान हुए |
| ऽध्रुवम् | मिथ्या ही है | इव | जैसे |
| इदं | यह नाम रूप | स्तवन | तुती करता हुआ |
| परो | अन्य युक्ति | जीहामि | लज्जित होता है |
| ध्रौव्य | सत्य असत्य | त्वां | आप को |
| अध्रौव्य | विषय वाले | न + खलु | क्या नहीं करता है |
| जगति | संसार पर | ननु | जरूर |
| गदति | कहते हैं | धृष्टा | निर्लज्जित |
| व्यस्त | नमोद प्रत्यक्ष | मुखरत | भाँकि रस की |
| विषये | पदार्थ वाले | | कहानियों |

क्योंह बनान सत क्योंह बनान असत यथ जगतस, क्योंह बनान अनिर्वाची छुय ई
 आसुवन । नाना प्रकारह मतह बादियन हुन्दि किज, ही शिवह हैराण छुत व सप-
 दान । चानि भक्ति हुन्दि जोरह निर्लज्जित बनिय, बकवासि छुह छुस तुता चाजा
 करान

کیتہ وان ست کینہ وان است تیجہ گلشن کنیم وان از و اچی چو بی آسون
 ناپکارہ متہ و این ہندی کن ہی شیوہ جہان چو بی چپن
 پیاز بجکتی ہندی زورہ ز جلت بنقہ یکوا سی موسیٰ توتہ مانی کران

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्द वपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिशयत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति । १३ ।

| | | | |
|--------------|----------------------------|------------|-------------------------|
| तवैश्वर्यं | आप की महिमा | ततो | फिर |
| यत्नाद् | यतन से | भक्ति | पुज्यो पर राग |
| यत् | जो | श्रद्धा | गुरु वेदान्त वाक्यों पर |
| उपरि | उपर की तरफ | | श्रद्धा |
| विरिञ्चो | ब्रह्मा जी | भरगुरु | बहुत गौरव से |
| हरिः | विष्णु | गृणद्भ्यां | तुता करने वालों को |
| अधः | नीचे की तरफ | गिरिश | हे कैलास पर रहने वाले |
| परिच्छेत्तुं | मापने के लिए | यत् | जो |
| यातौ | गई हुई | स्वयं | खुद ही |
| अनलं | कामयाब न हुये | तस्थे | अपरोक्ष हुआ था |
| अनलः कन्दः | ज्योतिर्मय (जयते लिङ्ग) | ताभ्यां | उनको |
| वपुषः | सुरूप को | तव किं | आपकी क्या |
| | | अनुवृत्तिः | सेवा |
| | | न | नहीं |
| | | फलति | फल देती है |

न ज्योति स्वरूप हरि किञ्च ब्रह्मा, वोनि किञ्च विष्णो मेनुनि द्राय ।
शवय थकि स्यठाह अन्द लोबुख न चोनुय, दोशवय छरिय तिम वापस द्राय ।
मे पतह श्रद्धा भक्ति किञ्च तिमव चेय, ही कैलास वासी करहय तोता ।
नय सन्मुख द्युत थक दर्शुन, चानि सीवाइ हुन्द फल ई नेरान् ॥

چون حیوانی سوسا ہری کن بر صفا
دشمنے تھکی سینہاہ اند لوبک چو نوبی
ہی کیلے واسی کرے تو
چانی سیدای ہند پھل بی تیران
دشمن درشن

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरिव्यतिकरं
 दशास्यो यद्वाहूनमृत रणकण्डूपरवशान् ।
 शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
 स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् १४

| | | | |
|-----------|---------------|--------------|---------------|
| अयत्नाद् | बिना कोशिप | शिरः | सिर रूपी |
| आसाद्य | पा कर | पद्म | कमल |
| त्रिभुवनं | त्रिलोकी को | श्रेणी | कतार से |
| अवैरि) | शत्रु के भय | रचित | किइ हुई |
| व्यतिकरं) | रहित | चरण | चरण |
| दशास्यो | रावणासुर | अम्बुरुह | कमल के |
| यद् वाहू- | जो बुजावों को | बलेः | पुजा वाले |
| नमृत | धारने लगा | स्थिराः याः | मजबूत हुई |
| रणकण्डू | युद्ध पर | त्वद्भक्तेः | आपकी भक्ति का |
| परवशान् | परिश्रम वाले | त्रिपुरहर | त्रिगुणातीत |
| | | विस्फूर्जितं | फल है |
| | | इदं | यह |

ही त्रिपुर हर रावणन युस यत्तह रोस्तुय, युद्ध वापत वोज दारिन शत्रु गालिन ।
 शत्रव रोस्तुय जगतस ओस फेरवुन, सारिय त्रिभुवनुक युस राज प्रोबुन ।
 ओस तस सु महिमा पननि भक्ति हुन्द, कलह चटि २ ओस माल बनावान ।
 सोय पनुनि कलह माल चानेन पंपोशि पादन, प्यठ ओस पूजाइ तिम चे लागान ।

۱۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۲۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۳۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۴۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۵۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۶۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۷۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۸۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۹۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ
 ۱۰۔ ہر روز با او بیست و ہشت مرتبہ

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः १५

| | | | |
|------------|-------------------|----------------|--------------------------|
| अमुष्य | उस रावण को | अलभ्या | पाने के नाकाविल |
| त्वत्सेवा | आपकी सेवा से | पाताले | पाताल में |
| सम् अधिगत | पाई हुई | अपि | भी |
| सारं | ताकत वाले | अलस चलित | आलस से दबाई हुई |
| भुजवनं | भुज जंगल को | अङ्गुष्ठ शिरसि | अंगुठे के नोक से |
| बलात् | जोर से | प्रतिष्ठा | रहने की जगह |
| कैलासे अपि | कैलास पर्वत भी | त्वय्य | आप पर |
| त्वत् | आप के | आसीद् | था |
| अधिवसतौ | निवास्थान | ध्रुवम् | निश्चय करके |
| विक्रमयतः | पूर्ण पौरुष चलाने | उपचितो | एश्वर्य वाला |
| | वाले | मुह्यति | मोह को पाता है |
| | | खलः | दुष्ट [नष्ट बुद्धि वाला] |

ही शंकर तमि रावणन चाने , सीवाइ किज बोज त बल मोबुन ।
तमि बलहके मदह चानिस निवासस , कैलासह पर्वतस यलि अरह हातुन करुन ।
त्यलि आलुखि पाठ्य पननि न्योठह के , नोखह सूति युथुय पृथ्वी दबावथन ।
अदह तस तिथिस रावनस पातालस , मज्ज ठहरनस कांह जाय न क्येह लवन ।

ہی شکر تم راون چانے
تہی بلہ کے مدہ چانیس نوامیس
تہی آلیہ پامٹی پٹنی نیوٹھ کے نوک
ادھ تاس پاتلس متز عٹرس کا تہہ بلہ پکیتہ لین

यद्वि सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
 अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
 न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
 नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१६॥

| | |
|------------|-------------------|
| यत् | जो |
| ऋद्धि | संपदा |
| सुत्राम्णो | इन्द्र की |
| वरद | ही वर देने वाले |
| परम उच्चैः | बहुत उंचे |
| अपि | भी |
| सतीम् | होने वाले |
| अधः चक्रे | नीचे दवाई है |
| बाणः | बाणा मुर ने |
| परिजन | नोकरों की |
| विधेय | मान हानी के रक्षक |
| त्रिभुवनः | त्रैलोकी वाले |

| | |
|-----------|----------------|
| न | नहीं |
| तत् | वह |
| चित्रं | अचम्भा है |
| तेस्मिन् | उस पर |
| वरिवसितरि | सेवा करने वाले |
| त्वत् | आप के |
| चरणयोः | चरणों की |
| न | नहीं |
| कस्य अपि | किस को भी |
| उन्नति | उन्नति के लिए |
| भवति | होती है |
| शिरसः | सिर |
| त्वय्य | तुम पर |
| वनतिः | प्रणाम करता |

ही वरद यमि बाणासुरन पननि विभवह किज, इन्द्रह सञ्ज सम्पदा वान दबावुन ।
 अदह तस चानि चरण सीवाइ हुन्द फल, त्रैलोकी पानस आदीन करुन ।
 छुनह तैजुव सयु प्रणाम चे शेरह किज, कस अकिस छनह अदह उन्नति वनान ।

اندرہ ستنز سمپدا بون دیاون
 تریلوکی پانس ماتحت کرن
 کس اکس چھہ اده اوتی بھن
 ہی درویمی باناسن پنی دمجوہ کرن
 اده تش چانی چرن سیوہ ہندھیل
 جھونہ تجسب لیس پرنام چہ شیرز کرن

अकाण्ड ब्रह्माण्डक्षयचकितदेवा सुर कृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्ग व्यसनिनः ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|----------|-----------------|
| अकाण्ड | बे मौका [अनियत समय पर] | स | वह |
| ब्रह्माण्ड | त्रिलोकी के | कल्माषः | कालाई |
| क्षय | नाश होने पर | कण्ठे | गले पर |
| चकित | डरे हुये | तव न | आप के नहीं |
| देव | देव | कुरुते | करता है |
| असुर | असुर | न | नहीं |
| कृपा | दया पर | श्रियम् | शोभा को करता है |
| विधेयस्य | लगे हुये | अहो ! | अचम्बा है |
| आसीत | था | विकारः | तबदीली |
| यः | जो | अपि | भी |
| त्रिनयन | हे तीन नेत्र वाले | श्लाघ्यो | फरफर होता है |
| विषं | जहर को | भुवन | लोगों के |
| संहतवत | पीने वाले | भयभङ्गः | भय दूर करने पर |
| | | व्यसनिनः | शौक वाले |

ही त्रिलोचनह बेमोकह त्रैलोक नाशस प्यठ, राक्षस त दीव आसि खोचानी ।
योसह दया चे करथख छुनथख जहर चथ, तमि स्रुति अद बचेइ त्रैलोकी ।
सुय सियाही निशानह चानिस हटिस प्यठ, युस दिवान शूभा व्यइ ध्यकनी ।
त्रैलोकीहुन्दिस खोफस नष्ट करनस प्यठ, छुख चुय शोकह सोस रोजानी ॥

राक्षस ते दीव आसि खोचानी
 तमि स्रुति अद बचेइ त्रैलोकी
 सुय सियाही निशानह चानिस
 हटिस प्यठ, युस दिवान शूभा
 व्यइ ध्यकनी । त्रैलोकीहुन्दिस
 खोफस नष्ट करनस प्यठ, छुख
 चुय शोकह सोस रोजानी ॥

अभिद्वार्था नैव कचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥८॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------------|-----------------------|
| अभिद्वार्था | नाकामयाव | म पश्यन् | वह देखता हुआ |
| नैव | नहीं हो | ईष | हे ईश्वर |
| कचिद् | किमी से | त्वां | आपको |
| अपि | भी | इतर | सामान्य |
| स देव | देव सहित | सुर | देवताओं |
| असुर | असुर | साधारणम् | भराभर |
| नरेः | मनुष्यों पर | अभूत् | हुवा था |
| निवर्तन्ते | वापस नहीं आते हैं | स्मरः | कामदेव |
| नित्यं | हर वखत | स्मर्तव्यात्मा | सौच के काबिल रूप वाला |
| जगति | संसार में | नहि | नहीं |
| जयिनो | जीत करने वाले | वशिषु | योगियों को |
| यस्य | जिस के | पथ्यः | अच्छा फल निकालता है |
| विशिखाः | तीर | परिभवः | अनादर |

ही भगवानह युस कामदीवह सुन्द तीर, दीवन मनुष्यन राक्षसन न त्रावान ।

जगतस मंज सारिनुय युम जनान् नाकाम गच्छिथ युस न वापम इवान ।

आव चे निश भस्म गव तस कामदीवस, सामाज दीव लुह आसुय चय बुद्धान
मुति सपद सोरनस लायक यूगिपण करि, अनादर तस फल पेशुष लु नेरान ॥

ही भगवान् हे कामदीव सुन्दरी तीर, दीवन मनुष्यन राक्षसन न त्रावान ।
जगतस मंज सारिनुय युम जनान् नाकाम गच्छिथ युस न वापम इवान ।
आव चे निश भस्म गव तस कामदीवस, सामाज दीव लुह आसुय चय बुद्धान
मुति सपद सोरनस लायक यूगिपण करि, अनादर तस फल पेशुष लु नेरान ॥

मही पादाघाताद्रजति सहसा संशयपदं
 पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
 मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
 जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

| | |
|---------------|--------------------|
| मही | भूलोक |
| पादाघाताद् | पैर के दबाव से |
| व्रजति | जाती है |
| सहसा | अचानक |
| संशय पदं | शक में |
| पदं विष्णु | अन्तरिक्ष भवनों को |
| भ्राम्यद्भजनः | हिलाइ हुइ भुज |
| परिघरुग्ण | तोफों से इरद गिरद |
| | किइ हुये |
| ग्रहगणम् | तारामंडल वाले |
| महुः | बारं बार |
| द्यौः | सुर लोक |
| दौस्थ्यं | चकर को |
| याति | पाता है |

| | |
|-------------|-------------------|
| अनिभृत | हर वखत |
| जटातडित तटा | दवाई हुइ तरफ वाला |
| जगत | जगत की |
| रक्षायै | रक्षा के लिये |
| त्वं | आप |
| नटसि | नाच कर |
| ननु | निश्चय करके |
| वामैव | नियमों से |
| विभुता | ऐश्वरय होता है |

पृथ्वी चानेन पादन हुन्दि दबावह सूती अचानक शुकस मंज गछान
 चानेन बोजन हुन्दि ह्योर कुन हिलवनह किञ्च तारामंडल सौरुय चंचल सपदान
 चाने जटा मुकुटह रगडि सूती बार बार सोरग चकरस छु वातान
 भगवानह जगत्तुचि रक्षाइ वापत छुख नचान विभूता चाञ्छिनह कयैह जानान ॥

پر پھوی چانن پادان ہندی دباوہ
 چانن بوزن ہندی ہمیر کن ہلاونہ کن
 میانے جٹا موکٹ رگڑی سیتی
 بھگوان جگت رکھیای بابت چھک چان

سیتی امانک شمس منتر گچان
 تارامندل سوروی چنچل پدان
 بار بار سورگ چکرس چھو وٹان
 و بھوتا سپانی چھنہ کہنہ زانان

वियद्वापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
 प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
 जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि—
 त्येनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ २० ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------------|-------------------|
| वियद्वापीः | आकाश में | जगद्द्वीपा कारं | भूलोक जजीरे की |
| | फैला हुआ | | शकल वाला |
| तारागण | तारा समूह | जलधि वलयं | समन्दरने घेरा हुआ |
| गुणित | जानने में आया हुआ | तेन | उस प्रवाहने |
| फेनो | कफ दरया के | कृतं | किया है |
| उद्गमरुचिः | जमने की शुभा वाले | इति | ऐसे |
| प्रवाहो | फैलाव | अने नैव | उसी विधी से ही |
| वारां यः | पाणियों का जो | उन्नेयं | जानने के योग्य |
| पृषतलघु | बिन्द छेन्ट सा पतला | धृत महिम | हे माय प्रेरक |
| दृष्टः | नजर में आया हुआ | दिव्यं | अनिर्वाच्य |
| शिरसि ते | सिर पर आप के | तव | आप का |
| | | वपुः | वास्तव रूप |

आकाशस मंज फैल्योमृत तारामण्डल, दरियावस कफ हुह शोभा दिवान ।
 पान्युक यृत फैलाव चानि शेरुहके अकिस बून्दस समान वाजनह इवान ।
 सोय अख बून्द जगतह दीपह शकलि ब्यह समन्दर, तथि अन्द र कुर हुह
 बेरह करान । इथय पाख्य जाननह बापत ही मायाधारी, वास्तव स्वरूप चान
 अनिर्वाची हु आसान ॥

آکاش منزه عیلمت تارا منڈل
 پانیکی بوند چیلایو جانی شیرو کے
 سوئی اکہ بوند جگتہ دیپ شعلی بیند
 متھے پامنی ناستہایت ہی مایا داری
 دریاوس کف ہیو شومہا دیوان
 کس بوندس سمان بوندہ ایوان
 تنہ اندی اندی کف ہیو گہر کران
 دستو سوپ چون ازواجی چہو آسان

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो-
रथाङ्गे चन्द्राकौ रथ चरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥२१॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|---------------------|
| रथः | रथ | दिधक्षोः | जलाने के इच्छा वाले |
| क्षोणी | पृथ्वी | वे | आप को |
| यन्ता | रथ चलाने वाला | कोयं | कोन यह |
| शतधृतिः | ब्रह्मा | त्रिपुर | त्रिपुरासुररूप |
| गेन्द्रो | समीरु पर्वत | तृण | तिनके को |
| धनुः | कमान | आडम्बर | जमगठकी |
| अथो | और | विधिः | तरीका |
| रथानो | दो चक्र | विधेयै | भक्तों से |
| चन्द्राकौ | चांद व सूर्य | क्रीडन्त्यः | खेलते हुई |
| रथ चरणपाणिः | विष्णु | न खलु | नही है |
| शरः | तीर | परतन्त्रा | नियति के |
| इति | ऐसे | प्रभुधियः | ईश्वरों की खयालाव |

त्रिपुरह त्रेन भस्म करबुनि रथ चे पृथ्वी, ब्रह्मा रथस छुय चलावान ।
सुमेरु पर्वत कमान रथ चक्र सिर्गि चन्द्रम, विष्णो पानह छुय तीर चे आसान ।
चलावनु च इच्छा छुख चुय पानह ईश्वर, परतन्त्र रोस्तुय च खेल करान ॥

ترتیب زن جسم کوئی رتبه چه برتخوی برپا آتش چوئی چوئی چیلان
صبر بیت زمان رتبه چکر سر به چکره دلشمنو پانه شیر چوئی چه آسان
چلانچ نیچا چک چوئی پانه ایشور برتنتر دوستی چه حیل کران

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयो-
 र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्र कमलम् ।
 गतो भक्त्युद्रेकः परि नतिमसौ चक्र वपुषा
 त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ २२ ॥

| | | | |
|-----------|-------------|---------------|------------------|
| हरिः | नारायण | गतः | हुवाथा |
| ते | आप के | भक्त्युद्रेकः | भक्ती की तीव्रता |
| साहस्रं | हजार गिनती | परिणतं | फलरूप |
| कमल बलिं | कमलसे पूजा | असौ | वह |
| आधाय | करके | चक्रवपुषः | नारायण की |
| पदयो | पैरोंकी | त्रियाणां | तीन की |
| यत् | जो | रक्षायै | रक्षा के लिई |
| एकोने | एक से कम | त्रिपुरहर | त्रिमल हारक |
| तस्मिन् | उस हजार पर | जागर्ति | हुशयार |
| निजं | अपना | जगताम् | भवनों की |
| उदहरन् | चढाया था | | |
| नेत्रकमलं | नेत्र कमलको | | |

ही त्रिपुर हरह चानि पाद पूजाइ यलि, विष्णोहस सासकमल ओसोयलागान।
 अस्त्र पंपोश गोस कम पनुन नेत्र कोडुन, चानि पादह पूजाइ पुशरोवुन।
 अदह वन्यव त्रैलोकी हुज्जि रक्षाइ हुन्द, हीतो सु भक्ति हुँद फल छुय ई बनान।

ही त्रिपुर हरह चानि पाद पूजाइ यलि, विष्णोहस सासकमल ओसोयलागान।
 अस्त्र पंपोश गोस कम पनुन नेत्र कोडुन, चानि पादह पूजाइ पुशरोवुन।
 अदह वन्यव त्रैलोकी हुज्जि रक्षाइ हुन्द, हीतो सु भक्ति हुँद फल छुय ई बनान।

ऋतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे ऋतुमतां
 क कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
 अतस्त्वां उत्प्रेक्ष्य ऋतुषु फलदान प्रतिभुवं
 श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥ २३ ॥

| | | | | | |
|-------------|--------------------|---------|------------|--------------|----------------|
| ऋतौ | त्रिविधकर्म | वाङ्मनो | अतस्त्वां | उत्प्रेक्ष्य | उससे आप को |
| | | वाचक | | | जान कर |
| सुप्ते | नष्ट होने पर | | ऋतुषु | | यच्चों पर |
| जाग्रत | होशयार हो | | फलदान | | फल देने के |
| त्वमसि | आप है | | प्रति भुवं | | जिमवार को |
| फल योगे | फल देने पर | | श्रुतौ | | सतशास्त्रों पर |
| ऋतुमतां | यज्ञ करने वालों को | | श्रद्धां | | श्रद्धा भक्ती |
| क कर्म | कहाँ काम | | बद्ध्वा | | रख के |
| प्रध्वस्तं | नष्ट होगा | | दृढ परिकरः | | दृढ उद्योग |
| फलति | फलदेवेगा | | कर्म सुजनः | | कामों पर लोग |
| पुरुषाराधनं | किसी की सेवाके | | | | |
| मृते | बिना | | | | |

यज्ञ करन वान्यन यज्ञ मोक्कलनस प्यठ फल दिनह बापत हुशयार च रोजान,
 चानि सीवाइ रोस यज्ञ करन वान्यन यज्ञुक फल तिमन कतिछु मेलान ।
 सारिनुय यज्ञन प्यठ फलदिनह बापत सारिय जिमहदार चेय छिय जानान,
 अदह मनुष्य वीदस प्यठ श्रद्धा गखिदगखिद कर्म करनुक उद्योग तिम करान ॥

يکينہ کران والين یکینہ موکلنس پہ
 چانی سیوائے روس یکینہ کران والين
 سارنی یکینن پہ چیل ونہ باپت
 اوہ منشن ویدس پہ شردھا گتھی
 چیل ونہ باپت ہوشیلہ یہ روزان
 یکینوک چیل نمن کتہ چھو میلان
 سارسی وندہ وار چھی چھی زمان
 گتھی کرم کرمک اودیوگہ تم کران

क्रियादत्तो दत्तः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
 मृषीणामात्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
 क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
 ध्रुवं कर्तुं श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखा ॥ २४ ॥

| | | | |
|------------------------------|----------------|----------------|-----------------|
| क्रिया दत्तः | कर्मों पर दाना | क्रतुभ्रंशः | यज्ञ का नाश |
| दत्तः | दत्त प्रजापति | त्वत्तः | आप से |
| क्रतु पतिः | यजमान | क्रतुफल | यज्ञ का फल |
| अधीशः | अधिष्ठान | विधान | देने पर |
| तनुभृतां | देहधारियों का | व्यसनि नः | शोक वाले |
| मृषीणां | ऋषयों का | ध्रुवं | निश्चय से |
| आत्विजं | तत्र का काम | क्रतुः | यजमान |
| शरणद हे भक्तों को पालने वाले | | श्रद्धा विधुरम | श्रद्धा हीन |
| सदस्या सभा के गुण दोषचिन्तक | | अभिचाराय | चुरे फल के वाले |
| सुरगणाः इन्द्र आदि देवों का | | हि | ही |
| | समुह | मखा | यज्ञ बनते हैं |

भगवान् दत्ति प्रजापत क्रियाय प्यठ ओस हुशियार देहिधारियन हुँद स्वामी युथ
 यजमान दीवता त इन्द्राज आसि सभासद यज्ञिकि ऋषि आसि अमि यज्ञिक
 ब्रह्मण यज्ञुक फल दिनस प्यठ चे शौकह सुस्ति स चानि भावनाय रोस सु ओस
 दत्ति यजमान नाश सपुद चानि किज तथ तिथिस यज्ञस चानि भावनाइ रोस
 यज्ञ उल्टह फल दिवान ॥

بھگوانہ دھمی ریجابت کر بانی پیٹھے اوس ہوتا رہی
 دینا تہ اندراجہ اسی سبھا سدیگ ریشی آہی امی یگنیک برہمن
 یگنیک پھل دینس پیٹھے چہ شوق ستر چانی بھادنا سہے روس شو اوس دھمی بھمن
 نش سید چانی کرن تھہ پتھنس بھمن چانی بھاونٹے روس یگنیہ اللہ پھل دیل

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्धूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धमुष्पाणेर्यातं दिवमऽपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २५ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|---------------|
| प्रजानाथं | ब्रह्मा का | धनुष पाणि | कमान हाथ वाले |
| नाथ | हे स्वामी | यातं | भाग्य हुये |
| प्रसभं | जोर से | सपत्राकृतं | तीर का लक्ष |
| अभिकं | काम के | अमुं | उस का |
| स्वां | अपनी | त्रिसन्तं | दरे हुये |
| दुहितरं | कन्या को | ते | आप से |
| गतं | गये हुये | ऽद्यापि | अब भी |
| रोहित | हिरण | त्यजति | छोड़ता है |
| भूतां | बने हुये | न | नहीं |
| रिरमयिषु | मैथन के इच्छा से | मृगव्याध | शिकारी का |
| मृष्यस्य | मृग के | रभसः | भय |
| वपुषा | शरीर से | | |

ब्रह्मा रूपी मन कामनाइ जोरः किञ्च बुज रूप कन्याई पतः ओस दोरान सु
चनेइ हिरणी अमि सन्दि पतः दोरान किञ्च ब्रह्मा रूप मनन ति मृग रूप दोरान
अद चूय शिकारि बानेथ तीर कमान दारिथ मन रूप ब्रह्मा निशानः कुर्थन
आकाशस पिठ वातिमुतिस ब्रह्माजिथसु तस चोन शिकार्य खोफ छुनह चलन ॥

ब्रह्मा रूपी मन कामनाइ जोरः किञ्च बुज रूप कन्याई पतः ओस दोरान सु
चनेइ हिरणी अमि सन्दि पतः दोरान किञ्च ब्रह्मा रूप मनन ति मृग रूप दोरान
अद चूय शिकारि बानेथ तीर कमान दारिथ मन रूप ब्रह्मा निशानः कुर्थन
आकाशस पिठ वातिमुतिस ब्रह्माजिथसु तस चोन शिकार्य खोफ छुनह चलन ॥

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
 मुनीनां दाराणां समजनि स कोपव्यतिकरः ।
 यतोभग्रे गुह्ये सकृदपि सपर्या विदधतां
 ध्रुवं मोक्षो श्लीलं किमपि पुरुषार्थ प्रसविते ॥२६॥

| | | | |
|-----------|----------------|--------------|------------------|
| अपूर्वं | अलौकिक | यतो | जिस |
| लावण्यं | सौन्दर्य | भग्रे गुह्ये | टूटे हुए लिंग को |
| विवसनतनोः | दिगम्बर देवादि | सकृदपि | एकही दफा भी |
| ते | आपके | सपर्या | पूजा |
| विमृशतां | देखते हुए | विदधतां | करने वालों को |
| मुनीनां | ऋषियों के | ध्रुवं | निश्चय से |
| दाराणां | स्त्रियों को | मोक्षो | मोक्ष |
| समजनि | पैदा हुआ | अश्लीलं | गाली |
| सकोपि | वह कोई | किमपि | कोई |
| व्यतिकरः | चित्त विकार | पुरुषार्थ | प्रयोजन को |
| | | प्रसविते | देने वाला आप |

ही शङ्कर चोन दिगम्बर स्वरूप युस-ओस अलौकिक सुन्दर निरावरण , सु रूप
 चोन बुद्धिधुय ऋषियन हुआन त्रियन सपुद-अन्दरह चित्तविकाराह गव तिमन ।
 भ्रम शापह किज फुटिमुतिस लिङ्गस पूजा करुख - मोक्ष कामना गई तिमन पूरख,
 तनह शिवलिङ्ग पूजा करनुह सूती-कमहर कामनाई सिद्ध छि सपदान ॥

اسی الگوک سند نروان
 اندرہ چیتہ وکارہ گوتم برہم
 موکھی کامنا گیتی
 کہ کہ کامنائی سیدھی سید
 ہی شکرہ چوان وکبر سربیس
 سو پچون وچیتھی نیشن منن نرین پید
 تپا کرن فوتمش نشتس پوجا کرک
 نندہ شیو لگ پوجا کرک سیتی

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-------------|----------------------|
| स्वलावन्यः | अपने सौन्दर्य को | यदिस्त्रैणं | जब स्त्रीजन |
| आ शंसा | कहने वाली | देवी | पार्वती |
| धृत धनुष | पकड़े हुये | यमनिरत | हे ज्वितीन्द्रिय |
| | कमान वाला | देहार्ध | अर्धनारीश्वर |
| अहनाय | जठ | घटनात | को होने से |
| तृणवत् | तीनके की तरह | अवैति | जानेगा |
| पुरः | अपने सामने | त्वां | आप को |
| प्लुष्टं | दग्ध होइ को | अद्धा | प्रत्यक्ष |
| दृष्ट्वा | देख कर | वत वरद | हे कामदेव जलाने वाला |
| पुरमथन | हे त्रिमलहारक | मुग्धा | मूढ़ है |
| पुष्पायुधमऽपि | कामदेव को भी | युवतयः | औरतें |

ही त्रिगुण हारक पनुनि सुन्दरता ध्यकबुझ, पार्वती पानस सन्मुख आस बुझन,
गास कचि हुन्दि पाठ्य तस कामदीवस, भस्म गछान चानि आकि दृष्टि किज।
ही वरदायक यलि सु जानि छुखं त्रियव, ज्युन्मुत च त्यलि त्रिई मूढ़ छि संपदन।

ہی ترگن ارک بن سندر تا تھیکون
گما سہ کچی ہندی باٹھی ترس کامدیس
ہی وردائیک بی سوزانی چھوک تر یو
یارو تہی پس منکھ آسی دھین
نہیں گچیان بیانی اکی دشی
زیونست چیتا ترید موٹھ چھی سین

श्मशानेष्वक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
 श्विताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
 अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
 तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २८ ॥

| | | | |
|---------------|---------------|------------|--------------|
| श्मशानेषु | श्मशानो पर | अमङ्गल्यं | बुरा |
| आक्रीडा | क्रीडा करना | शीलं | आचार |
| स्मरहर | कामनाशक | तव भवतु | आपका हो |
| पिशाचा | भूत प्रीत | नामैव | निश्चय से |
| सहचरा | परिवारहे | अखिलं | सब |
| चिताभस्मालीपः | चिताभस्म | तथापि | फिर भी |
| | मला है | स्मर्तृणां | भक्तों को |
| स्रगपि | माला भी | वरद | वर देने वाले |
| नृकरोटी | मनुष्य के | परमं | बड़ा |
| पारकरः | सिरों का कतार | मङ्गलमसि | कल्याण हो |

ही वरदायक श्मशानन प्यठ खेल करनी, भूत प्रीत परिवार चोन आसवुन ।
 चिता भस्म अतुर चाज चे मनुष्य कलह माल नाल्य, युथ आचार चोन युद छु
 आसवुन । आसितन युथुय चाल चलन चोनय, भक्तिन प्यठ मंगल दिवुन छुख
 आसवुन ॥

ہی درو ایک شمشان بیٹھ کھیل کرنی
 چیتا بھسم اتر چا ج چہ مनुष کالھ مال نال
 آسیتن یوٹھ یوٹھ چال چلن چونے
 بھکتین پٹھ منگل دیون چھک چہ آسون

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायान्तमरुतः
 प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
 यदालोक्याह्लादं हृद् इव निमज्ज्यामृतमये
 दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२६॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|---------------------------|
| मनः | चित्त से उलठा | यत | जिस |
| प्रत्यक | असत्य जड दुःख | आलोक्य | अनुभव करके |
| | [जगत से उलठा] | अह्लादं | आनन्द को |
| चित्ते | चिदानन्द रूप | हृद् इव | जील में सा |
| सविधं | विधी सहित | निमज्ज्य | डुबे हुये |
| अवधाय | रखकर | ऽमृत मये | अमृत रूप |
| आत्मरुतः | जीते हुये प्राण | दधति | अपरोक्ष करता |
| प्रहृष्यत | हर्षित हुये | अन्तः | अन्तर्मुख भाव से |
| रोमाणः | रोम वाले | तत्त्वम् | तत्त्वं लक्षण से |
| प्रमद | आनन्द | किमपि | अनिर्वाच्य |
| उत्सिचित | बरे हुये | यमिनः | योगीश्वर [नाम रूप रहित] |
| दृशः | आंख वाले | तत्किल भवान | वही है आप |

जगतह निश बखलाफ युम चित्त स्वरूप तथ वारह पात्य मनह सुस जेनिमति
 प्राण सोस । रूम रूम आसन बुधदन्य सुखरूपी आशि स्वांत वरिथुय नेत्रव सोस ।
 युस यूगीश्वर अमृत रूपी हृदय सरसुय फटिमति आनन्दह सोस । अपरोक्षी करिथ
 चानिस स्वरूपस सुय । चान स्वरूप अनिर्वाची नाम रूप रोस ॥

جگتہ نش بر خلاف یس جیت مرویست
 روم روم آسن او تختہ سکہ روپی
 یس بگویشود امرت روپی
 پر دخی کرتہ چانس سرویس سوی
 وارہ پامٹی منس زینیتی پرانہ
 اشی سیت بھرمتی نتروس
 ہر دیہ سری نعتی آست
 چون سروپ انجی نام روپ
 چانہ

त्वमक त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्व हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणतां विभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ ३० ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------|---------------|
| त्वमऽर्कः | आप सूरय हैं | परिच्छिन्नां | परिमितां |
| त्वम सोम | आप चन्द्रमा हैं | एवं त्वयि | तुज पर ऐसे |
| त्वमऽसि | आप हैं | परिणतां | परिनाम वाली |
| पवन | हवा | विभ्रतु | शोभा वाली |
| त्वं हुतवह | आप अग्नी हैं | गिरं | वानी को |
| त्वं आप | आप जल हैं | न विद्मः | न जानते हे |
| त्वं व्योम | आप आकाश हैं | तत्त्वं | बुढ़ वसतु |
| त्वं धरणि | आप पृथ्वी हैं | वयं | हम भक्त |
| आत्मात्वं | यजमाण आप हैं | इहतु | इस संसार में |
| इति च | इसी तरह | यत्त्वं न भवसि | जो तु नहीं है |

चुय छुख सिरिं चन्द्रम वायु अग्न, जल आकाश पृथ्वी त यजमन
योद इमन आठन प्यठ थकह सोस साज वाणी, छुनह कांह वस्तु चेय रोस यस
आसना संसारस मंज छुनह कांह त्युथ चीज, यथ मंज चोन स्वरूप छुनह भासना

چھوکی چھوک سرچیندم وایو اگن جل ہاکشن پر تھوی تہ یجمن
یہ میں آٹن پیٹھ تھا کس سانی دانی چھو نہ کا نہہ ستو پی روں ایس آسن
سدارس منر چھو نہ کا نہہ تو تھ پمیز بیتہ منر چون سروپ چھو نہ باسن

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधतीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरनुरन्धानमणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणं द गृणात्योमिति पदम् ३१

| | | | |
|----------------|------------------|---------------|---------------------|
| त्रयीं | वेद | तुरीयं | तुरयात्मक |
| तिस्रो वृत्ती | स्त्व रज तम | ते धाम | आप का स्वरूप |
| त्रिभवनं | भू भवः स्वः | ध्वनिभिः | शब्दों से |
| अथो त्रिन | और ३ भी | अनुरन्धानं | पीछे चलने वाले |
| अपि सुरान | ३ स्वर [अनदात] | अनुभि | लक्ष्मणों |
| अकाराद्यैः | अ मात्रा से ण तक | समस्त | अखण्ड |
| वर्णैस्त्रिभिः | अ उ म | व्यस्तं त्वां | परिच्छिन हुये आप को |
| अभिदधत | कहा हुआ | शरणं द | मक्ति पालन |
| तीर्ण | अतीत हुये | गृणात्य | कहता है |
| विकृति | विकारों से | ओं इति पदम् | ओं यह पद |

ओं इमं त्रय अक्षरं हुन्द द्विय वनान , अकार शब्द रिखवेद भूर्लोक
सत्तो गुण , उद्धात स्वर पतह विकारह सूतिय, युजर्वेद भुवः लोक व्यइ रजोगुण
अनुदात तैजस पतह मकारह सूतिय, अथर्वेद स्वः लोक व्यइ तमोगुण, स्वरित
प्राज्ञ इथय पाठ्य त्रेन अक्षरं हुन्द, उपाधिक नाम रूप आत्मक मुत्तम शब्दन
पतह एकवुन्यन त्रिविध विकारण गाल्लय होय, चोन तुया स्वरूप तथि द्विय वनन
उंकार ई पद ईश्वर रूप सारिसूम, जीवह रूपह किज व्योन व्योन द्विय वनन ॥

اوم میں ترن اکھن ہند چھٹی و نان اکارہ شبہ رکھوید بولوک ستونگن
ادوات سہر پتہ دکارہ سیتی یجہ روید بولوک بیہ ستونگن
ادوات یجس پتہ منکارہ سیتی اختر وید سہر لوک بیہ ستونگن
سورت پرگنیہ پتھے پاٹھی ترن اکھن ہند اوپادھک نام روپ آتھک ستونگن
پتہ پکونین تری وودھ دکالین گھت ہیر چون تریا سروپ تھہ چھی دھن
ادکارہ می پدایشہ سروپ سارسی جیو روئیں کن بیون برون چھی دھن

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहा-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते । ३२

| | | | |
|-------------|----------------|-------------|------------------|
| भवः | भवदेव | अमुष्मिन् | इस नामाष्टक में |
| शर्व | शर्व | प्रत्येकं | हर एक महिमा को |
| रुद्रः | रुद्र | प्रविचरति | अनवास्थित हो |
| पशुपति | देव | देव | हे चिद्धन |
| अथ | और | श्रुतिः अपि | वेद भी |
| उग्रः | देव | प्रियाय | परम प्रेमास्पद |
| सहमहान | नामों के साथ | अस्मै | उस स्वात्माद्वैत |
| तथा | उसी तरह | धाम्ने | तुरीय स्वरूप में |
| भीमेः | देव | प्रणिहित | अर्पन किए हुये |
| ईशानः | देव | नमस्यः | अहं भाव वाला |
| इति यत | ऐसे ही | अस्मि | हुँ |
| अभिधाना | आठ गिन्ती वाले | भवते | आप को |
| अष्टकं इदम् | | | |

भव दीव शर्व दीव रुद्र दीव पशुपति दीव , उग्र दीव महादीव भीम दीव ईशान दीव । इमन आठन नावन हुन्द ग्रथ अक्युक महिमा , वेद छिनह महिमा तम्युक वनिथ ह्यकान । अथि परमीश्वर सज्जि जाई तुर्या स्वरूपस , नमस्कार पनुन छुस भ अर्पन करान ॥

ایہہ اوستھو دیو، رُدر دیو، پشپتی دیو
 اور گرو دیو، مہادیو، جیم دیو، ایشا دیو
 ہیں آٹن ناون ہند پتھ ایکوک لہما
 وید چیت لہما تمیوک و تھہ تہیکان
 اتی ہمیشہ سنہری جائے تو ریا سروس
 نمنسکار پش چوس بہ اوسن کران

वपुःप्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारेनैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः संप्रत्यतनुरहमग्रेऽप्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तदिदं अपराधद्वयमपि ॥ ३३ ॥

| | | | |
|----------------|---------------|------------|-------------------|
| वपुः | शरीरके | नमन | प्रणाम करता हुआ |
| प्रादुर्भावात् | प्रकट होने से | मुक्तः | मुक्त शरीर हुआ |
| अनुमितं | जान लिया | संप्रति | इस वक्त |
| इदं | यह | अतर्नुदं | शरीर रहत |
| जन्मनि | जन्मों में | अग्रेपि | आगे भी |
| पुरा | पिछले | अनितिमान् | प्रणाम न करनेवाला |
| पुरारे | हे शंकर | महेश | हे ईश्वर |
| नैवाहं | नहीं मैंने | क्षन्तव्यं | माफी देना |
| क्वचित् | किसी तरह | तदिदं | वह यद |
| अपि | भी | अपराध | दोषोंको |
| भवन्तं | आप के | द्वयमऽपि | जोड़ी को |
| प्रणतवान् | जुका हुआ हूँ | | |

ही शङ्कर पनुन शरीर प्रकट सपदनह किज । छुम करान पानै पनुन अनुमान ।
पतिम्यन जन्मन मंज कुनि जन्मस मंज । ओ सुम न चंय कुन नमस्कार करान ।
उनिक्कयन यथ जन्मस माक्क्योमतुय । छुम व यमि किज चंय कुन प्रणाम करान ।
ओणठ कुन शरीरह रोस इयम न करनह चाय तोता । इमन दोन अपराधन चमा
क्षय मंगान ॥

ہی شکر مین شری رکٹ سید نہ کن
بیتن زمین منتر کوئی زمیں منتر
اونکن بیتن زمیں منتر موکلیو منتر
بد نہ کن شریرون ہم نہ کرنہ چنی پرنام
چھوٹ کران پانئے پٹن انسان
اوس نہ چنی کن منتر کران
چھوٹ یہ بیمہ کن چنی کن پرنام کران
بیمہ دون اپوان کھا چھوٹ منکان

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
 नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
 नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
 नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|------------------------------|
| नमो | नमस्कार | नमः | नमस्कार |
| नेदिष्ठाय | नजदीक वाले को | वर्षिष्ठाय | बहुत बुड़े को |
| प्रियदव | जंगलों पर प्रिय | त्रिनयन | त्रिनत्र वाले |
| दविष्ठाय च | बहुत दूर वाले का | यविष्ठाय | बहुत छोटे को |
| नमः | नमस्कार | नमः | नमस्कार |
| नमः | नमस्कार | नमः | नमस्कार |
| क्षोदिष्ठाय | बहुत सूक्ष्म का | सर्वस्मै ते | ब्रह्म को |
| स्मरहर | हे कामदेव नाशक | तदिदं | उस इस |
| महिष्ठाय च | बहुत मोठे को | अति सर्वाय च | अतीत |
| नमः | नमस्कार | नमः | तुर्यासुरूप को भी नमस्कार हो |

खटाह नजदीक रूपम चानिस नमस्कार । वनन हुन्दिम प्रेमियस चय नमस्कार ।
 कामदीव गालवुनि सूक्ष्म रूपम प्रणाम । मोटिस रूपम चानिस नमस्कार ।
 त्रिनेत्र दारवुनि बुद्ध रूपम प्रणाम । लोकिटम रूपम चानिस नमस्कार ।
 सारिमुख वातिमुतिस च प्रणाम । सास्य-निशि अतीतस तुर्या रूपम नमस्कार ।

ستاره نردیک روپ چانيس نمسکار
 کامدیو گالونی سوسه روپس پرنام
 زرنیتیر دارونی بده روپس پرنام
 ساری و اتیتس چانيس پرنام

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
 प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
 जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
 प्रमहसिपदे निस्त्रिगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------------|-----------------|
| बहल | बहुत | जन | जीवों के |
| रजसे | रजोगुणवाले | सुखकृते | पालने वाले |
| विश्वोत्पत्तौ | जगतकी सृष्टी वाले | सत्वोद्रिक्तौ | सत्वगुणवाले |
| भवाय | भवरूप को | मृडाय | सुख रूप को |
| नमो नमः | नमस्कार हो | नमो नमः | नमस्कार |
| प्रबल | बहुत | प्रमहसि | मायैश्वर्य से |
| तमसे | तमोगुणवाले | पदे | अतीत स्थान वाले |
| तत्संहारे | जगत प्रलय वाले | निस्त्रिगुण्ये | गुणातीत |
| हराय | हर रूप को | शिवाय | शिव रूप को |
| नमो नमः | नमस्कार हो | नमो नमः | नमस्कार |

जगतुचि सृष्टि प्यठ रजोगुण सोस्ति स, भवरूपस चानिस नमस्कार ।
 जगतकिस प्रलयस प्यठ तमोगुण सोस्ति स, हररूपस चानिस नमस्कार ।
 जगतकिस पालनस प्यठ सत्वगुण सोस्ति स, सुखरूपस चानिस नमस्कार ।
 गुण सोस्ति स तुर्यारूपस महेश्वरस, कल्याण रूपस चानिस नमस्कार ।

جگتہ سرشتی پٹہ رجوگن سستس
 جگتہ کس پرلینس پٹہ توگن سستس
 جگتہ کس پالینس پٹہ سستس
 جگتہ کس رستس پٹہ یاروینس مہیشس
 بوه روپس چانيس نمسکار
 ہرہ روپس چانيس نمسکار
 سکھ روپس چانيس نمسکار
 کلسیان روپس چانيس نمسکار

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
 क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदद्धिः ।
 इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
 द्दरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३६ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|-----------------|
| कृश | विनाश ही | इति | इसी विचार से |
| परिणति | फलवाला | चकितम | डरे हुये |
| चेतः | बुद्धिः (से) | अमन्दी | पटुबुदी वाली |
| क्लेशवश्यं | विशेषों का स्थान | कृत्य | करके |
| क्व | कहाँ है | मां भक्ति | मुजको भक्ती |
| इदं | यह | आधात | कराने लगी है |
| क्व | कहाँ | वरद | हे वर देने वाले |
| तव | आप को | चरणयोः | चरणों पर |
| गुणसीम | त्रिगुण से | ते | आप के |
| उल्लङ्घिनी | अतीत | वाक्य | तुति मय |
| शश्वद | अविनाशी | पुष्प | फूलों से |
| ऋद्धिः | समपदा | उपहारम् | पूजा को |

ही वरदायक म्पाज बुद्ध दुःखन आधीन , खराब फल दिनह वाजिज म्य बासान ।
 कति नाशि रस्ति सम्पदाइ सोम चोन महिमा , गुणन हुन्धव हदवनिश अतीत
 आसान । अपि किज खूचिमति वाज सोम व आमवुन , पत्तन्य भक्ति छयम म्य
 वननावान । चान्यन चरणन प्यठ इ अस्तोति शकलि , पोशि पूजा छयम म्य
 करनावान ॥

ही دریا یک میان بدھ و کائنات آوین
 کتنی ناشہ رستہ سمیاد یہ سرچون ہما
 امی کن جو جیتی بوزشس بہ استہ
 چانن چرن پٹھ بی استونی شرکلا
 خراب پھل ونہ واجینہ بہ باسان
 گن ہند بوبو حدو نشہ اتیت آسان
 پن جیتی جیم مہ ونہ ناوان
 پوشہ پشہ جیم مہ کرناوان

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
 सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
 लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
 तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३७॥

| | | | |
|--------------|---------------|----------|--------------|
| अमित | अञ्जन [सुरमा] | लिखति | लिखेगी |
| गिरिसमं | पहाडसा | यदि | अगर |
| स्यात् | होगा | गृहीत्वा | पकड कर |
| कज्जलं | सियाहि | शारदा | सरस्वती |
| सिन्धुपात्रे | समन्दर दवात | सर्वकालं | हरवखत |
| सुरतरु | कल्पवृक्ष | तदपि | फिर भी |
| वरशाखा | उतम टहनी | तव | आप के |
| लेखनी | कलम | गुणानाम | गुणों के |
| पत्रं | कागज | इष | हे सर्वसमर्थ |
| उर्वी | पृथ्वी | पारं | पार को |
| | | न याति | न छेगी |

सुरेश्वर पहाड आसि बुद मीलि रूपी , समन्दर आसिय दवात रूपी ।
 कल्पवृक्ष शाख योद आसिय कलम रटिय , कागज चदल आसि योद पृथ्वी
 सरस्वती रोजि योद सर्व काल लेखान , चाजन गुणन हुन्दिस हदस न वाविय ॥

शुभक भिषाई प्रसी रूपा
 कल्पवृक्ष शाख योद आसिय कलम रटिय
 कागज चदल आसि योद पृथ्वी
 सरस्वती रोजि योद सर्व काल लेखान
 चाजन गुणन हुन्दिस हदस न वाविय ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः

प्रथितगुणमहिम्नो ज्ञानकारुण्यमूर्ते ।

सकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताभिधानो

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतत् चकार ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-------------|--------------|-------------|-----------------|
| असुर | दैत्य | सकल | सब |
| सुर | देव | गुण | गुणों से |
| मुनीन्द्रैः | योगियों ने | वरेण्यः | अच्छा |
| अर्चितस्य | पूजा की हुयी | पुष्पदन्त | पुष्पदन्त |
| इन्दुमौलेः | शिवजी | अभिधानः | नामवाला |
| प्रथित | मशहूर | रुचिरः | अच्छे |
| गुणमहिम्नः | गुणमहिमा | अलघुवृत्तैः | लम्बे छन्दों से |
| ज्ञान | अनुभव | स्तोत्रं | तुति |
| कारुण्य | दया के | एतत् | यह |
| मूर्ते | सुरूप वाले | चकार | करने लगा था |

असुरव दीवव मुनीश्वरव पूजयुत सु, शिवनाथ ह्यकस चन्द्रम युम दारवुन ।
गण्डमति गुण महिमा तस निर्गुणेश्व सुन्द, पुष्पदन्तन उत्तम गुणव सोम
युस आसवुन । जान जान जेह्यव छन्दव सोम ई तोता । करने लजोव तमि ह
स्तोत्र बनोवुन ॥

اسو، دیو، منیشور و پوجیت سو شو ناخه ڈکس جدرمیس دارون
کنڈ متی کن مہاتس زکین اشیر سند پوشپہ دنتن اوتم گنوسس یس اسون
جان جان زیمٹو چھندوسس یی تو تا کرنے لجاؤ متی یی ستوتر بیتاؤن

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेत-
 त्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्य-
 स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
 प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-------------|------------|------------|------------|
| अहरहर | हर दिन | स | बह |
| अनवद्यं | अच्छे | भवति | होवेगा |
| धूर्जटेः | शिवजी का | शिवलोके | शिवलोक में |
| स्तोत्रं | स्तोत्र | रुद्रतुल्य | शिव जैसा |
| एतत् | यह | तथात्र | वैसा यहां |
| पठति | पढ़ेगा | प्रचुरतर | बहुत |
| परम | बड़े | धनायुः | धन आयुः |
| भक्त्या | भक्ती से | पुत्रवान् | पुत्र वाला |
| शुद्धचित्तः | साफ दिल से | कीर्तिमान् | यशवाला |
| पुमानयः | जो पुरुष | च | भी |

युस दोहय शुद्धमन बडि भक्ति भावह किज, शिवनाथह सुझ तोता ई आसिय
 परान । शिव लोकस मेंज शिव समान इह लूकस, आयुवान पुत्रवान धनवान
 यशवान बनान ॥

نہیں دوہے شدہ من بڑھکتی بھاؤ کن
 شیوناقہ سترتوای ہی اسی پران
 شو کوکس منتر شیونمان یہ لوکس
 سہ کوکس منتر شیونمان یہ لوکس

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं स्नानं योगादिका क्रिया ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४० ॥

| | | | |
|-------------|---------------|------------|--------------|
| दीक्षा | गुरु का उपदेश | महिम्नस्तव | महिम्नस्तव |
| दानं | दान करना | पाठस्य | पाठ के |
| तपः | तप करना | कलां | डुकड़े को भी |
| तीर्थ स्नान | तीर्थ स्नान | न | न |
| यागादिका | यज्ञ वगैरा | अर्हन्ति | समान है |
| क्रिया | अच्छे काम | षोडशीम् | सोलहें |

यज्ञ दान धर्म तप होम तीर्थन हुन्द स्नान, इम्यव काम्यव सति फल यूत
वनान । “महिम्नस्तोत्रम्” पाठ करनह सति, तिमव खोतह शुराह
गुण फल प्राप्त सपदान ॥

یہاں دہم تب ہوتم تھن ہندنان یو کامیو سیت پس یس بنان
”یہاں ستوتک“ یا تمہ کرے سیتی تو غرتہ شوالہ گن چل برایت پیدان

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।

अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरो परम् ॥ ४१

| महेशाना | शिवजी से श्रेष्ठ | अघोरात | अघोर | श्रेष्ठ |
|---------|------------------|---------|-----------|---------|
| न | नहीं | न | न | |
| अपरः | दूसरा | अपरः | दूसरा | |
| देवः | देव है | मन्त्रः | मन्त्र है | |
| महिम्नः | महिम्नः पारसे | न | नहीं | |
| न | न | अस्ति | है | |
| अपरः | दूसरा | तत्त्वं | लाभकारक | |
| स्तुतिः | तुता है | गुरोः | गुरु से | |
| | | ऽपरम | दूसरा | |

महादीवह सुन्दि खोतह थोद न व्यई कांह दीव, “महिम्नस्तोत्र” खोतह थूज न कांह तोता । अघोर मन्त्र खोतह थोद व्यई न कांह मन्त्र, गोरह [गुरु] सुन्दि खोतह थोद न व्यई कांह स्वरूप ॥

مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو
 مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو
 مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو مہاشیو ہندی خوتہ تہا نہ کانیہ دیو

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः

शिशुधरवरमौलेदेवदेवस्य दासः ।

स खलु निजमहिम्नो अष्ट एवास्य रोषा-

तस्तवनमिदमकार्षीदिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ४२॥

| | | | |
|-------------|----------------|-------------|-------------|
| कुसुमदशननाम | पुष्पदन्त था | स | वह |
| सर्व | सब | खलु | निश्चय करके |
| गन्धर्व | गन्धर्वों का | निज | अपने |
| राजः | राजा | महिम्नो | महिम्न से |
| शिशुधर | चन्द्र धारणवाल | अष्टेव | गिरा था |
| वरमौले | मौतपर | रोषात | क्रोध से |
| देवदेवस्य | [शिवजी] | तवनम इद | यह तब |
| | देवों का देव | अकार्षीद | करने लगा |
| दासः | दास था | दिव्यदिव्यं | अलौकिक |
| | | महिम्नः | महिम्नः पार |

पुष्पदन्त ओस गन्धर्वन हुन्द राजह, शिव नाथह सुन्द ओस दास आसवुन ।
तस्सुन्दि क्रोधह किज ओस ओहदह निश गिर्योमुत, तमि किज महिम्नस्तोत्र
वनोवुन ॥

پوشید و نت اوس گندرون بند راجه شوناته سند اوس واس اسون
تسندی کړوده کن اوس مېه نش کړویت تمه کن مېه سستو تر بېن اون

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
 पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेता ।
 व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
 ॥ ४३ ॥

सुरवर
 मुनि
 पूज्यं
 स्वर्गमोक्षैक
 हेतुं
 पठति
 यदि
 मनुष्यः
 प्राञ्जलि
 नान्यचेता

उत्तम देव
 मनीश्वर को
 पूजनी है
 स्वर्ग मोक्ष का
 हेतु है
 पढ़ेगा
 जब
 मनुष
 हाथ जोड़ कर
 एकाग्र चितसे

व्रजति
 शिवसमीपं
 किन्नरैः
 तूयमान
 तवनमिदं
 अमोघं
 पुष्पदन्त
 प्रणीतं
 जाता है
 शिवके नजदीक
 किन्नर
 तुता करेगे
 यह तब
 शुद्ध
 पुष्पदन्त
 कही हुई

उत्तम दीवन मुनीश्वरन युस पूजनी शिव, स्वर्गुक त मूच्छुक हीतो आसवुन ।
 पुष्प दन्त वनिमुच ई तोता न डलवुनि, मनह सोस गुलि गण्डिय आसिययुस
 परान गच्छि सुय शिनायस नजदीक किन्नर, तस्सुन्जय आसनय तिम तोता
 करान ॥

تم دیون مینیشن ایس یو جی شو
 شورگک تر موکھیک مہنہ آسون
 شہرہ دین وینج ہی تو تانہ دلونی
 مینہ سس گل گنہ آسی لیران
 سوسی شہرہ دین تر دیک کینر
 آسنہ آسنہ تو تانہ تر کران

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
 स्तोत्रेण किलिवषहरेण हरीप्रयेण ।
 कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
 सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४४ ॥

श्री
 पुष्पदन्त
 मुखपङ्कज
 निर्गते न
 स्तोत्रेन
 किलिषु
 हरेण
 हर
 प्रियेण

शोभावाला
 पुष्पदन्त
 मुखकमल से
 निकली हुयी
 यह तोत्र
 पाप
 दूर करने वाला
 शिव को
 खुशो आने वाली

कण्ठस्थितेन
 पठितेन
 समाहितेन
 सुप्रीनतो
 भवति
 भूतपति
 महेशः

याद की हुवा
 पढी हुयी
 ध्यान की हुयी
 प्रसन्न
 बनता है
 जीवों का स्वामी
 ईश्वर

श्री पुष्प दन्तह सुन्दि पंपोशि मोखह निशि , द्राघुच ई तोता पापन नाल्लन ।
 शिव नाथस खोश करवुज ई तोता , युस याद करि परि ध्यान आसि दारान ।
 वमिस प्यठ सपदान प्रसन्न पानह शिवनाथ , जीवन हुन्द स्वामी युस आसान॥

مشرقی شہر دشتہ سندی ہمیشہ موکھ نشہ
 شہر خوش خوش کرونی بی تو تا
 دیلیج بی تو تا یان گلان
 یس یاد کری پری دھیان آسی داران
 جیون مند سوامی یس چھو آسان
 0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४५ ॥

इत्येषा
वाङ्मयी
पूजा
श्री
छद्म
पादयो

यह
वानी रूपी
पूजा
शुभायमान
शङ्कर
दो पादों

अर्पिता
तेन
मे
देवः
प्रीयतां च
सदाशिवः

अर्पन की
जिस से
मुझे
देव
प्रसन्न बने
इश्वर [शिव]

वानी रूप ई पूजा शुभायमानस, शङ्करस पादन प्यठ व अर्पण करान ।
तमि विज सदाशिव वनितन म्य प्यठ प्रसन्न, यूतुय योत छुस भ तस शिवस
मङ्गलान ॥

و انی روپ بھمی پوجا شو بھایمانس
نی کن سداشومہ پوجا شکتی پوجا
شکرس پاوان پیٹھ بہ اپین کران
CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भजन

आशयि च्यानि आस छुख च भवभय हरः

शंकरः ईतनै चि आरम्योनूय ।

चूय वन्तू कुस छुम यमि कटिनि भवसरः

चिय रुस्त यम चालि भार म्योनूय ॥ १ ॥

छान्दान छान्दान गूय म्य जन्मादिक

चिय पतः पतः करसना च भुथि म्य पिख ।

रठहत भ नालमति अनहत चूय भ अरः

शंकरः ईतनै चि आर म्योनूय ॥ २ ॥

बुछथूय थप दिम्य दामनस रटये चि खोर

पकनः किन्ह दिमहय न कुनीचि ओरयोर ।

वन्हैः शंकरः दोरिरः चोन किथ भ जरः

शंकरः ईतनै० ॥ ३ ॥

यचकाल वोतुम हृदयस म्य अरमान

कर हावक म्य आरतीस पनुन पान ।

मुख बुछन वापत अछि लजमच म्य दरः

शंकरः ईतनै० ॥ ४ ॥

कया गछिय कम चि शंकरः च यद बोजख

अकिस्सूय दनस सन्मुख म्य रोजख ।

त्यलि भोज चलनम जन्मन हन्दि अरःसरः

शंकरः ईतनै० ॥ ५ ॥

भेकसन खभर हिन्य युद् छु चोन व्यवहार

दुःखियन दुःख दार करुण चोन कार ।

त्यली कुनः इवान शंकर- छुख च म्योन घरः

शंकरः ॥ ६ ॥

मज्ज वति शंकरः भेकस भ प्योमुत

च्यानि यिनः भापत भ तारी गोमुत ।

यित जल मुख म्य हाव नतः चि रुस्त गोमुत भ भरः

शंकरः ईतनै० ॥ ७ ॥



निवेदन

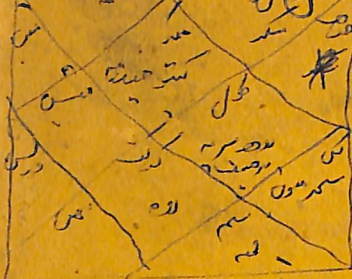
श्री जीयालाल जी सराफ जिनहों ने कश्मीर देश में सब से प्रथम कश्मीरी भाषा में संस्कृत पुस्तकों का अर्थ बनाकर भजन कीर्तन पाठ पूजा का आरंभ करके प्रवर्तन में लाया उन्हीं के प्रधानता में श्री भवानी मण्डली २००० प्रति शनिवार रात को हारीपर्वत के स्थान पर भजन कीर्तन पूजा पाठ करती रहती है

श्री भवानी मण्डली ने लोगों के उपकार के लिये महिम्नःपार श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ पदार्थ सहित छपाने का प्रयत्न किया ताकि कश्मीरी भाषा में महिम्नःपार हर घर में पोंचे श्रीमान सराफ ने जो मण्डली के मुन्त है सुविचार करके मण्डली को २००० कापी कापी छपाने का अधिकार दिया ताकि मण्डली इस की आमदनी धार्मिक कार्यों पर खर्च करें

आशा है तमाम नर नारी हमारी मिहनत से लाभ उठाये और और महिम्नःस्तोत्र के खरेदने में मण्डली की सहायता करे।

श्री भवानी मण्डली

Handwritten text at the top of the page, likely a title or introductory note in Urdu/Hindi script.



Handwritten text to the right of the circular portrait, continuing the narrative or description.

Handwritten text below the portrait, possibly a signature or a concluding note.

पुस्तकें जो छप चुकी हैं और श्री भवनीमण्डली में भिन सकती हैं—

| | | | |
|-----|---|-------|-----|
| १. | पञ्चस्तवे कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित | मूल्य | ॥२॥ |
| २. | दुर्गासप्तपति अध्याय ४ कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित | | ॥१॥ |
| ३. | भजगोविन्दम् | " | ॥१॥ |
| ४. | [अतिभीषन] शिवचामरस्तोत्र | " | ॥१॥ |
| ५. | व्याप्तचराचर | " | ॥१॥ |
| ६. | जयनारायण तथा विष्णुचामर | " | ॥१॥ |
| ७. | गौरीस्तुति | " | ॥१॥ |
| ८. | सङ्ग्रहस्तोत्र [उत्पलतोत्र में से] | " | ॥१॥ |
| ९. | भजन माला पहला भाग दूसरा भाग | " | ॥१॥ |
| १०. | महिम्नःस्तोत्र | " | ॥१॥ |

Large handwritten text at the bottom of the page, likely a signature or a detailed note.

چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین
 چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین

چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین
 چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین

چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین
 چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین

چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین
 چشم اس حسن روشن تراو - و گوینده درین
 آینه می بیند - و گوینده درین
 ره دور کین می بیند - و گوینده درین